मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MHD–23

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

(एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2025

एम.एच.डी.–23 : मध्यकालीन कविता–01

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : ***प्रथम*** *प्रश्न अनिवार्य हैं। शेष प्रश्नों में से किन्हीं* ***तीन*** *के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) लगु जैस इह अहि बुतकारी।
चन्दन जैफर मिरै सँवारी॥
सरग पवान लाग जनु आयी।
चाहत बैंसौं जाइ उड़ायी॥
बाँसपोर हुत जनु घर काँढ़ी।
अछरि जइस देखि मैं ठाढ़ी॥
कोंइ पुहुप अस अंग गँधाई।
रितु बसन्त चहुँ दिसि फिर आई॥

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

(ख) अजहूँ चेति गहु सिष मूरिख, जनम अकारथ जात।
जल–थल, बाउ–अंगन को पुतरा, छिन मंहि होहि भसमात॥
कोटि जतन करि जोगि तपि हारै, निहचय हंसा उड़ि जात।
कहि रविदास राम भजि बावरे, बय बीते पछितात॥

(ग) खेलत कहूँ रहौं मैं बाहिर, चितै रहति सब मेरी ओर।
बोलि लेतिं भीतर घर अपनैं, मुख चूमतिं, भरि लेतिं अंकोर।
मखन हेरि देतिं अपनैं कर कछु कहि बिधि सौं करतिं निहोर।
जहाँ मोहिं देखतिं, तहँ टेरतिं, मैं नहिं जात दुहाई तोर।
सूर स्याम हँसि कंठ लगायौ, वै तरुनी कहँ बालक मोर॥

(घ) सेस गनेस महेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरन्तर गावैं।
जाहि अनादि अनन्त अखण्ड अछेद अभेद सुबेद बतावैं॥
नारद से सुक व्यास रहैं पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं॥

2. निर्गुण भक्तिकाव्य पर प्रकाश डालिए। 10

3. रसखान की कविता में अभिव्यक्त प्रेम–तत्व पर प्रकाश डालिए। 10

4. संत रविदास के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दीजिए। 10

5. सूरदास की काव्य–भाषा की विशेषताओं की चर्चा कीजिए। 10

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×5=10

(क) मुल्ला दाउद की भाषा–शैली

(ख) सगुण काव्यधारा

(ग) अष्टछाप

(घ) नंददास

× × × × ×

Downloaded from www.IGNOUBABA.com